SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छायावादोत्तरी साहित्य में व्यष्टि–समष्टि द्वन्द्व

दिनेश श्रीवास, (Ph.D.), हिंदी विभाग
शा. इ. व्ही. पी. जी. महाविद्यालय, कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
दिनेश श्रीवास, (Ph.D.), हिंदी विभाग
शा. इ. व्ही. पी. जी. महाविद्यालय,
कोरबा, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 07/06/2021
Revised on : ------
Accepted on : 14/06/2021
Plagiarism : 00% on 07/06/2021

शोध सार

साहित्य में विचारधाराओं का प्रभाव पड़ता है। हिंदी साहित्य के छायावादोत्तर युग में विचारधाराओं और वादों के प्रभाव को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। छायावाद के बाद हिंदी साहित्य के इतिहास में जो युग आया उसे छायावादोत्तर युग कहते हैं। छायावादोत्तर युग को प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, साठोत्तरी साहित्य आदि कालखंडों में विभाजित किया जाता है। प्रगति–प्रयोगवाद से प्रारंभ हुआ व्यष्टि–समष्टि का द्वन्द्व आनेवाले साहित्यकारों को भी प्रभावित करता रहा है। प्रगतिवाद में व्यष्टिहित की अपेक्षा समष्टि हित को श्रेष्ठ माना गया है। प्रगतिवाद व्यक्ति को स्वछंद स्वतंत्रता प्रदान करने का विरोधी है। प्रयोगवादी साहित्यकार व्यक्ति को भी महत्त्व प्रदान करता है। व्यष्टिवाद और समष्टिवाद के द्वन्द्व से व्यक्ति स्वतंत्रता के प्रति एक संकुचित दृष्टि का विकास और स्वतंत्रता में सामाजिक दायित्व का समावेश हुआ। साठोत्तरी साहित्य में व्यक्त व्यक्तिवादी मानसिकता, व्यर्थताबोध, अजनबीपन और स्वतंत्रता की खोज इसी व्यष्टि–समष्टि द्वन्द्व का परिणाम है।

मुख्य शब्द

छायावादोत्तर, व्यष्टि, समष्टि, साठोत्तरी, स्वातंत्र्योत्तर मोहभंग, द्वन्द्व.

प्रयोगवाद के बारे मे कहा जाता है कि यह प्रगतिवाद के विरोध स्वरूप प्रकट हुआ, किन्तु प्रयोगवाद छायावादी प्रवृत्तियों और हालावाद–मांसलवाद के प्रवृत्तियों के साथ प्रकट हुआ था। प्रयोगवाद ने छायावाद से व्यक्तिनिष्ठता और हालावाद–मांसलवाद से लघुवाद और भोगवाद ग्रहण किया। यद्यपि लघुवाद की पूर्ण प्रतिष्ठा नई कविता मे ही हो सकी। प्रयोगवादी कवि प्रगतिशील कविता के द्वारा व्यक्त हुए जीवन–मूल्यों और सामाजिक प्रश्नों को असत्य या सत्याभास मानकर व्यक्तिगत जीवन की गहरी संवेदनाओं